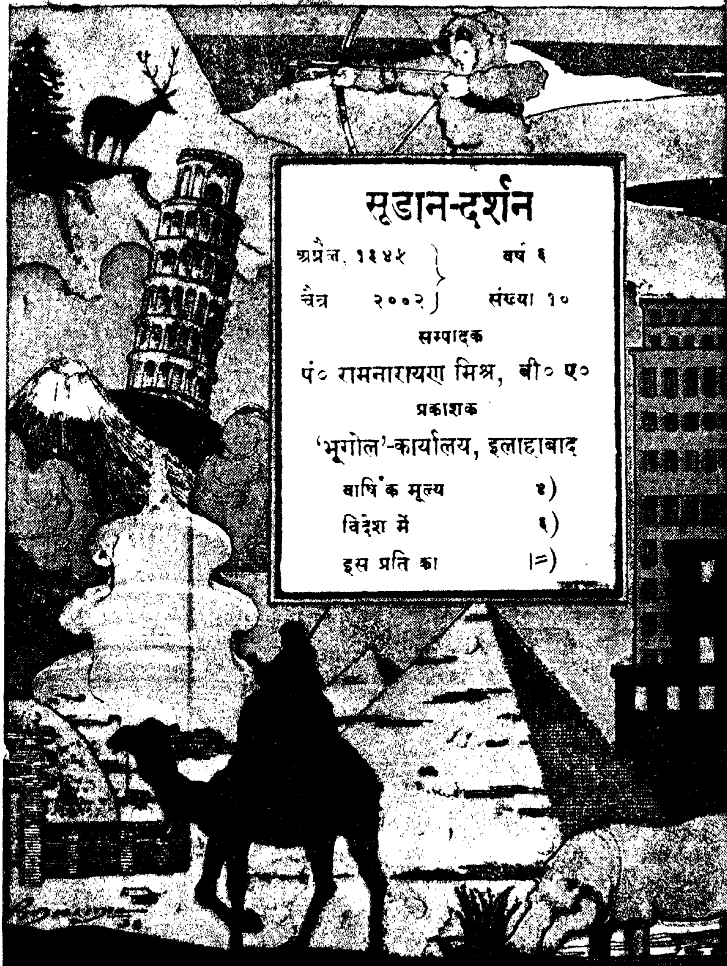
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६६



सूडान-दर्शन

अप्रैल, १९४५ } वर्ष ६

चैत्र २००२ } संख्या १०

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	३)
विदेश में	६)
इस प्रति का	|=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

अस्वान से लगभग १ मील की दूरी पर केरो से आने वाली रेलवे का अन्त हो जाता है। अन्तिम स्टेशन का नाम शल्लाल है। शल्लाल के आगे नील नदी से दोनों किनारे छोटी पहाड़ियों से घिरे हैं। घाटी इतनी तंग है कि मुश्किल से पगडंडी के लिये स्थान मिलता है। पथरीले किनारों से घिरे होने के कारण नील नदी के आसपास बहुत ही कम खेत मिलते हैं। आबादी और भी कम है। इसी लिये इस ओर रेल नहीं निकाली गई है। आने जाने का काम नील नदी में चलने वाले स्टीमरों से लिया जाता है। ये स्टीमर इस प्रकार बनाये गये हैं कि इनको बहुत गहरे पानी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनके ऊपरी भाग में छोटी छोटी कोठरियाँ होती हैं जिनमें पहले और दूसरे दर्जे के टिकट वाले मुसाफिर रहते हैं। तीसरे दर्जे के मुसाफिर नीचे लकड़ी की फर्श पर अपना बिस्तर बिछाते हैं। रेल से उतर कर मैंने स्टीमर का टिकट मोल लिया और एक ओर अपना बिस्तर बिछाया। यह यात्रा बड़े आनन्द की थी। इसमें समुद्री यात्रा के समान शान्ति रहती है पर रेल

यात्रा के समान पग पग पर नये दृश्य देखने को मिलते रहते हैं। नील नदी में बहुत से छोटे छोटे द्वीप मिलते रहते हैं। इनमें फिलाये द्वीप विशेष उल्लेखनीय है। मिस्री भाषा में फिलाये शब्द का अर्थ है झील का द्वीप। जब कमल की पँखड़ियों की तरह नील नदी की बाढ़ इस पहाड़ी द्वीप को डुबाने लगती है, उस समय इसका दृश्य बहुत ही सुहावना हो जाता है। द्वीप का बड़ा भाग प्राचीन मन्दिर से घिरा हुआ है। यह मन्दिर बहुत पुराना है। कहते हैं कि यह मन्दिर सिकन्दर महान के उत्तराधिकारी टालेमी राजाओं ने बनवाया था। प्राचीन मिस्री लोग यहाँ मगर का शिकार करते थे लेकिन फयूम के लोग मगर को देवता के समान पूजते थे। आजकल प्रपात के दोनों ओर मगर दिखाई देते हैं।

पहाड़ी किनारे होने पर भी वे एकदम वीरान नहीं हैं। कहीं कहीं पर अनुकूल ज़मीन में एक आध खेत हैं। कहीं छोटे छोटे गाँव हैं। ये गाँव ऊँचे पर बसे हैं। पर इनकी स्त्रियाँ अक्सर नदी में पानी भरने आती हैं। लड़के मछली मारते या तैरते दिखाई देते हैं। बड़े लोग प्यासे जानवरों को पानी पिलाने आते हैं। वे ही खेत में काम करते हैं। इस ओर पुराने मन्दिर अधिक नहीं हैं। आबूसिम्बेल का मन्दिर ऊपरी मिस्र में बड़ा विलक्षण है! यह मन्दिर एक ठोस चट्टान को १८५



आबू सिम्बेल

(३)

फुट गहरा काट कर बनाया गया है। इसके दरवाज़े पर ६६ फुट ऊँचो रामसेस की मूर्ति पर बड़ा बढ़िया काम है। सूर्योदय के समय यहाँ का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। पर इस तरह के मन्दिर बहुत नहीं हैं।

नील का स्टीमर केवल दिन में चलता है। रात को ठहर जाता है। कभी कभी वह दिन में ही ठहर जाता है। एक दिन स्टीमर नदी के बीच में एक टापू के किनारे ठहर गया। इस दिन इधर उधर घूमने में बड़ा आनन्द आया। इस टापू में बबूल के पेड़ विलक्षण थे। इनके काँटे बहुत बड़े होते हैं। दतौन करने पर इनका स्वाद भी हिन्दुस्तानी बबूल से भिन्न जान पड़ा। इस यात्रा में तीन चार दिन लग गये लेकिन जी ज़रा भी नहीं उकताया। अन्त में हमारा जहाज़ वादी हल्फा में ठहर गया। यहीं मिस्र देश समाप्त होता है और सूडान शुरू होता है। यहीं पासपोर्ट और सामान की जाँच होती है। इसके साथ ही तीसरे दर्जे के मुसाफिरों को चेचक का टीका लगवाना पड़ता है। पहले और दूसरे दर्जे के मुसाफिर मुक्त रहते हैं। मैं तीसरे दर्जे का टिकट लेकर सफर कर रहा था। पर मैं हिन्दुस्तान से चलने पर जहाज़ में टीका लगवा चुका था। मैंने डक्टर को ताज़ा निशान दिखलाया। उसने फिर टीका लगाना चाहा लेकिन मैंने टीका लगवाने से इनकार किया और

पहले डाक्टर का सार्टीफिकेट भी दिखा दिया। अन्त में टीका लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

वादीहल्फा के पास ही नील नदी का दूसरा प्रपात है। यहाँ स्टीमर यात्रा का तो अन्त हो जाता है पर यहाँ से खर्तूम को रेल मिलती है। रेल रोज़ नहीं छूटती है। हफ़्ते में दो बार रेल आती है और दो बार जाती है। रेल दूसरे दिन छूटने वाली थी इसलिये मैंने अड़ोस पड़ोस का खूब चक्कर लगाया। रास्ते के लिये तरबूज, खरबूजा और दूसरे फल ले लिये।

इस रेलगाड़ी में तीसरे दर्जे के सिवा एक चौथा दर्जा भी रहता है। मैंने चाहा कि मैं चौथे दर्जे का टिकट लूँ लेकिन टिकट बाबू ने कहा कि यह टिकट सिर्फ़ सूडानी लोगों को मिल सकता है। ग़ैर सूडानी लोगों को कम से कम तीसरे दर्जे का टिकट लेना पड़ता है। विवश हो मुझे तीसरे दर्जे का टिकट खरीदना पड़ा।

रेलगाड़ी के डब्बों के बीच में रास्ता होता है। इधर उधर दो तीन आदमियों के बैठने भर को जगह होती है। यात्री गाड़ी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा सकता है। हर डिब्बे के सिरे पर पानी का एक बड़ा मटका रख दिया जाता है। पर यात्री लोग अपने जूठे बर्तन डुबोते रहते हैं कोई कोई तो अधपिया पानी भी इसमें उँडेलते हैं। इसलिये मैंने अपने लिये एक सुराही

और थार्मसबादी हल्फा में ही भरकर रास्ते के लिये रख ली। इस रास्ते में विकराल रेगिस्तान है। पहले ग्यारह स्टेशनों के केवल नम्बर हैं नाम नहीं हैं। स्टेशनों पर रेल के कर्मचारियों को छोड़ कर और लोगों के दर्शन नहीं होते हैं। इन स्टेशनों पर एक दो कोठरियाँ बनी हैं। पेड़ या पानी का नाम नहीं है। पानी इनको रेलगाड़ी आने पर ही मिलता है। रेल से लगभग १२ घंटे चलने के बाद आबूहलीद स्टेशन आता है। यहाँ पानी मिलता है।

इसके बाद पानी अक्सर स्टेशनों पर मिलता है। अतबारा जंगशन इस ओर सब से बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक रेलवे लाइन लाल सागर के किनारे पोर्ट सुआकिन को जाती है। प्रधान लाइन खर्तूम से वादी हल्फा को जाती है। यहाँ से अतबारा नदी का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। इधर के लोगों की दशा बड़ी शोचनीय है। रेलगाड़ी के पास रोटी का एक एक टुकड़ा माँगने के लिये आते हैं। कहीं कहीं के लोग चटाई और टोकरी कमरबन्द बुनना जानते हैं। वे इस सामान को रेलवे स्टेशन पर बेचने आते हैं। कहीं कहीं के लोग मक्खन, दूध और पनीर बेचने आते हैं।

आगे चलकर दृश्य बदल जाता है। खर्तूम के पास पहुंचने पर कहीं कहीं काँस या दूसरी अधसूखी घास

दिखाई देने लगती है। शाम को ५ बजे रेलगाड़ी खर्तूम शहर स्टेशन पर पहुंच कर रुक गई। इससे पहले छावनी की बारकें रेल से साफ साफ दिखाई देती हैं। स्टेशन के मकान साधारण एक मंजिले हैं। बाहर सड़क के इधर उधर कुछ पीली बलुई मिट्टी है। शहर में ट्रैमगाड़ी चलती है। घोड़ागाड़ी और मोटर भी काफी हैं। मकान दूर दूर हैं। मैंने यहाँ के विक्टोरिया होटल में ठहरने का प्रबन्ध किया। इसके मालिक एक ग्रीक (यूनानी) सज्जन हैं। यहाँ गरमी खूब पड़ती है। नहाने के बाद ही शरीर फिर पसीने से भीग गया।

अरबी में खर्तूम हाथी की सूंड़ को कहते हैं। जहाँ पर श्वेत नील और नीली नील नदियाँ मिली हैं वहाँ संगम के पास दोनों नदियों के बीच की जमीन हाथी की सूंड़ के समान मालूम होती है। इसी से इस शहर का नाम खर्तूम पड़ गया। शहर के अधिकतर मकान नये हैं। घर तो छोटे हैं लेकिन उनका घेरा बहुत बड़ा है वे बहुत दूर दूर बने हैं। आलीशान मकान नील के किनारे पर हैं। यहाँ से नदी के स्टीमर दक्षिण की ओर चला करते हैं। स्टीमर घाट के पड़ोस में किनारे पक्के बना दिये गये हैं।

———

यात्रा

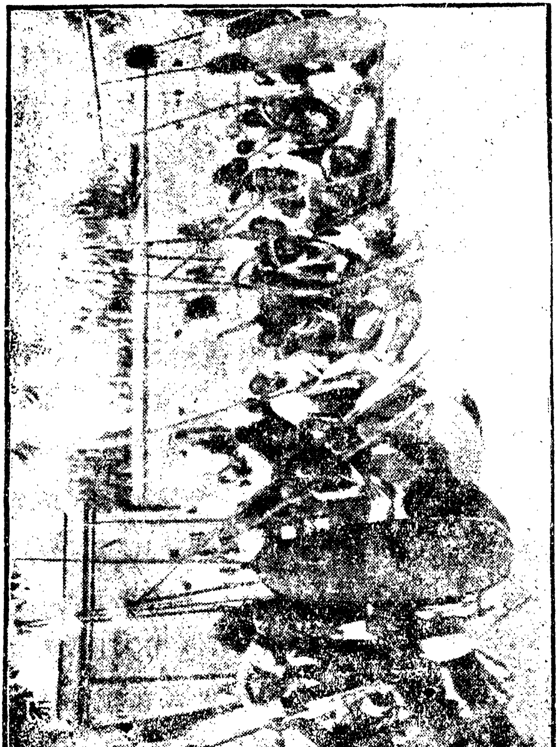
(२)

आजकल खर्तूम में शान्ति है। सब कहीं चहल पहल है। पर पिछले सौ वर्षों में जैसी उथल पुथल यहाँ हुई वैसी शायद ही और कहीं हुई हो। सूडान के पुराने इतिहास का तो ठीक ठीक पता नहीं चलता है। पर १८२० ई० से यहाँ इजिप्ट (मिस्र) की ओर से आक्रमण होने लगे। इजिप्ट में टर्की का राज्य हो गया था। वहीं से राजा नियुक्त होता था जो मिस्र देश पर राज्य करता था। मुहम्मद अली बड़ा प्रबल शासक हुआ। उसने स्वयं टर्की पर ही अधिकार जमाना चाहा उसके लड़के इस्मायल पाशा ने सूडान पर हमला किया। बहुत से भाग पर उसका अधिकार हो गया। इसी समय नीली नील और श्वेत नील के संगम पर उसने खर्तूम शहर बसाया। शेंडी के पास एक बड़ी दुर्घटना हुई। यहां के शासक ने इजिप्ट का शासन स्वीकार करने के बहाने से सारी फौज को निमन्त्रण दिया। बाहर घास फूस का घेरा था। जब सब लोग दावत उड़ा रहे थे तभी आग लगा दी गई। इस्मायल और उसके साथी सब जल कर भस्म हो गये। इसका बदला लेने के लिये दूसरी फौज़ आई तब से किसी न किसी रूप में

सूडान पर मिस्र देश का ही शासन रहा है। मुहम्मद अली ने लाल सागर के सुआकिन और मसावा बन्दरगाह टर्की से किराये पर ले लिये। इससे सूडान के समुद्री व्यापार को सुविधा मिल गई। मुहम्मद अली के उत्तराधिकारियों और खास कर इस्मायल पाशा ने लाल सागर के समस्त तट पर स्वेज़ से गार्डाफुई तक अधिकार कर लिया। भीतर की ओर उसने विषुवत रेखा तक अधिकार कर लिया। वह हिन्द महासागर के तट को भी जीतना चाहता था पर ऐसा करने से ब्रिटिश सरकार ने उसे रोक दिया। देश जीतने के अतिरिक्त उसने नहर, रेल आदि योरुपीय ढंग की कई चीज़ें चलाईं। पर इन नये ढंगों से उस पर योरुप के शक्तिशाली देशों का कर्ज लद गया। कर्ज़ के साथ ही विदेशियों का प्रभुत्व भी बढ़ गया। इसका असर सूडान पर भी पड़ा। यहाँ सरकारी कर्मचारियों को समय से वेतन नहीं मिलता था। सिपाही लोग प्रजा को लूटते खसोटते थे। सरकारी लगान बहुत अधिक थे। कुप्रबन्ध से लोगों में हाहाकार मचा हुआ था।

इसी समय सूडान में एक नई शक्ति का संचालन हुआ। इसका आरम्भ एक साधारण व्यक्ति से रहा। इस व्यक्ति का नाम मुहम्मद अहमद था। वह ऊंगोला के पास एक टापू में एक गरीब घर में

पैदा हुआ था। उसका बाप भी उसके छुटपन ही में मर गया था। पहले कई वर्ष तक उसने बर्बर में कुरान पढ़ा फिर वह खर्तूम के प्रसिद्ध शेख मुहम्मद शरीफ का



अफ्रीका के कुछ लड़ाका लोग

का चेला हो गया। धर्म की ओर उसकी रुचि पहले से ही अधिक इसलिये उसका गुरू उसे बहुत पसन्द

करता था। एक बार शेख साहब के यहां जलसा हुआ। उन्होंने नाचने गाने की भी अनुमति दे दी। इसे मुहम्मद अहमद ने कई बार माफी मांगी। लेकिन गुरू ने उसे माफ न किया। अन्त में तंग आकर मुहम्मद अहमद ने माफी पाने की आशा ही छोड़ दी। फिर माफ करने का सन्देश गुरू ने भेजा तो भी मुहम्मद अहमद ने माफी न चाही इस घटना से मुहम्मद अहमद का नाम दूर दूर तक फैल गया। सब कहीं उसके अद्भुत आचरण की चर्चा होने लगी। जब उसकी धाक बैठ गई तो उसने अपने घनिष्ट सम्बन्धी अनुयायियों से अपने को महदीअल मुन्तज़र (वह महदी जिसके पाने की लोग प्रतिज्ञा कर रहे थे) घोषित किया। मिस्री सरकार के अत्याचारों से लोगों को छुड़ाना उसका प्रधान उद्देश्य था लोग पहले ही से तंग थे। उन्होंने इस गुप्त घोषणा का हृदय से स्वागत किया। महदी ने छिपे छिपे सूडान के प्रायः सभी प्रान्तों में अपना संगठन प्रबल कर लिया। जब मिस्री कर्मचारियों को महदी के बारे में खबरें मिलती थीं तो वे उन पर विश्वास नहीं करते थे।

अन्त में खर्तूम के हाकिम ने मुहम्मद अहमद को पकड़ाने के लिये दो सरदारों की मातहती में सिपाही भेजे। जो पहले पकड़ लावे उसको इनाम भी घोषित

किया गया। इस खबर को पाते ही मुहम्मद अहमद के साथियों ने झोपड़े छोड़ दिये। वे ऊँची ऊँची घास में जाकर छिप गये। उधर सरदारों में होड़ मची कि कौन पहले पकड़े और इनाम ले। एक दूसरे से छिप कर दोनों ही अन्धेरे में चल पड़े। दोनों भिन्न-भिन्न दिशाओं से आकर खाली झोपड़ों की ओर गोली बरसाने लगे। अन्धेरे में दोनों एक दूसरे को शत्रु समझ कर घमासान लड़ाई में मर कट गये। जो बचे उनको मुहम्मद के सिपाहियों ने घास से निकल कर समाप्त कर दिया।

इसके बाद फशोदा के हाकिम ने लगभग डेढ़ हज़ार सिपाही भेजे। पर इन पर ऐसा अचानक आक्रमण किया गया कि कोई जीता न बचा। इस जीत के बाद मुहम्मद अहमद ने सारे सूडान में चिट्ठियाँ भेजकर लोगों को भड़काया और अपने को महदी घोषित किया। उधर ४००० शल्लाली फौज़ भेजी गई। महदी के साथी पहले ही से चौकन्ने थे। जब फौज़ रात को सो रही थी तभी महदी के भूखे नंगे साथी फौज़ पर टूट पड़े। सिपाहियों को गोली चलाने का भी मौका न मिला। सोते सोते ही सब काट डाले गये।

अब तो भोले भाले और पीड़ित सूडानी लोग सचमुच महदी को ईश्वर का दूत और अजेय समझने लगे। महदी ने अब औबैद पर घेरा डाला और जीत

लिया। इस जीत ने महदी की शक्ति दक्षिणी-पश्चिमी सूडान में एकदम बढ़ा दी। महदी की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिये एक और अन्तिम प्रयत्न किया गया। अँग्रेज़ी सेनापति हिक्स (पाशा) की अध्यक्षता में १०,००० सिपाही महदी पर हमला करने के लिये भेजे गये। पैदल सिपाहियों के बीच में सामान से लदे हुये ऊँट थे। भूल से रास्ता ऐसा चुना गया जहां पीने के पानी का अभाव था। रास्ते में ऊँची ऊँची घास थी जिसमें आदमी तो अच्छी तरह से छिप जाते थे लेकिन ऊँटों की लम्बी गरदनें दिखाई देती थीं। इन पर छिपे हुये महदी के सिपाही लगातार हमला करते थे। इन हमलों और प्यास के मारे सारी फौज नष्ट हो गई। फिर तो एक एक करके सूडान के सभी मिस्री और अँग्रेजी सेनापतियों ने हथियार डाल दिये। उत्तर की ओर एक अँग्रेजी फौज के हार जाने से खर्तूम एक टापू के समान बच गया। शेष सभी भागों पर महदी का राज्य हो गया। खर्तूम में जनरल गार्डन ने बड़ी हिम्मत से कई महीने तक महदी के हमलों का सामना किया। दो ओर नदी से शहर की रक्षा होती थी। तीसरी (दक्षिण) ओर मार्ग में खाई खोद कर बारूद भर दी गई थी। यदि समय से २००० सुसज्जित सिपाही भेज दिये जाते तो भी इस वीर और त्यागी जनरल की जान बच

जाती और खर्तूम में खूँरेज़ी न होने पाती। शान्ति के समय में भी सूडान पर शासन करने में ३ करोड़ रुपये का घाटा पड़ता था। फौज द्वारा खोये हुये प्रान्तों को जीतने और फिर से अधिकार जमाने में और भी अधिक खर्च होता। इस ज़िम्मेदारी के लिये अँग्रेज़ी सरकार तयार न थी। एक बार तो अमरीका और इंगलैंड के पूँजीपतियों से चार पाँच करोड़ रुपये का चन्दा इकट्ठा करने का प्रस्ताव गार्डन साहब ने किया पर इसमें भी उसे कोई प्रोत्साहन न मिला। उधर ओमदर्मन का क़िला महदी के हाथ आ गया।

यात्रा

(३)

श्वेत नील के घट जाने से महदी की सेना को इस ओर आने में बड़ी सहायता मिली। फिर क्या था खर्तूम की गलियों में खूब खून बहाया गया। गार्डन का सर काट लिया गया। रुंड को काट कर बोटी बोटी कर दी गई। मुँड महदी के सामने पेश किया। इस घटना से सारे सूडान पर महदी का राज्य हो गया। १२ वर्ष तक किसी बाहरी शक्ति ने सूडान के भीतर बढ़ने की हिम्मत न की। जो गोरे कैदी महदी के हाथ में पड़े उनकी जान तो बख्श दी गई। लेकिन उन्हें मुसलमान धर्म स्वीकार करना पड़ा और गुलामी में दिन काटने पड़े। इन्हीं कैदियों में स्लैटिन नाम के व्यक्ति की कहानी बड़ी रोमांचकारी है। अँग्रेज़ी जानने वाले पाठक फायर एन्ड सोर्ड इन सूडान (Fire and sword in sudan) नाम की पुस्तक पढ़ें। देश के नाम के लिये इस आशावादी उत्साही सज्जन ने १२ वर्ष तक गुलामी में दिन बिताये लेकिन भाग निकलने और बदला लेने की आशा को उसने कभी न छोड़ा। अन्त में असंख्य कठिनाइयों को झेलने के बाद वह सूडान से बाहर भाग निकलने में सफल हुआ। उसने सूडान को फिर से जीतने में भारी सहायता की।

महदी अपनी विजय का सुख अधिक दिनों तक न भोग सका। खर्तूम जीतने के कुछ ही दिन बाद वह बीमार पड़ा और आठ दस दिन में मर गया। यदि वह अचानक मर न जाता तो उसने मक्का, मदीना, कूफा और यरूशलम जीतने का निश्चय किया था।

महदी ने त्याग और इस दुनिया के भोग विलास की निस्सारता का प्रचार किया था। वैसे उसके जनान खाने में हर जीत के बाद चुन चुन कर सुन्दर स्त्रियाँ भेजी जाती थीं। पर उसने धनी और ग़रीब सब को एक सा बना दिया। उसने अपने और अपने अनुयायियों के लिये जिब्बा (प्योंदेदार फकीरी) पोशाक चुनी थी। उसने दहेज कम कर दिया था। उसने शादी में बड़ी बड़ी दावतों की जगह पर दूध और छोहारा खिलाने की प्रथा डाल दी। नाचना, गाना एकदम बन्द करा दिया था। मुरदों के लिये रोना या दावत देना भी निषिद्ध था। चोरी करने वाले का दाहिना हाथ काट लिया जाता था। पहले यह लोग बड़े बड़े बाल रखते थे। उसने सब को बाल कटाने की आज्ञा दी। वह अपने को ईश्वर का दूत बतलाता था। जो इस पर सन्देह करते उन्हें दंड दिया जाता था। पर गुलामी की प्रथा सब कहीं प्रचलित थी। गुलाम खुल्लमखुल्ला बेचे और मोल लिये जाते थे। बाज़ार में जिस तरह बैल को

चला फिरा कर और प्रत्येक अंग की परीक्षा करके मोल लेते हैं ठीक उसी तरह से गुलाम की बाज़ार में परीक्षा होती थी। स्त्रियों में युवा और सुन्दर स्त्रियों के अधिक दाम लगते थे। एक मनुष्य कई स्त्रियाँ रख सकता था।

महदी के मरने पर खलीफा अब्दुल्ला ही को राज्य मिला। पर उसका प्रबन्ध अच्छा न था। लोगों में शीघ्र ही असन्तोष फैलने लगा। लाल सागर के तट पर इटली वाले आ डटे। उधर फ्रांसीसी लोग अटलांटिक महासागर से हिन्द महासागर की ओर बढ़ रहे थे। इतने में जनरल स्टैलिन मिस्र देश में स्थित अंग्रेज़ी अफसरों की सहायता से १२ वर्ष की कड़ी गुलामी झेल कर सूडान से निकल भागा। उससे बाहरी दुनिया को फिर सूडान का असली हाल मालूम हुआ।

सूडान को फिर से जीतने की तयारी की गई। १४ मार्च सन् १८९६ ई० में अंग्रेज़ी सरकार ने किचनर साहब को (जो मिस्री फौज के सेनापति थे) सूडान जीतने की आज्ञा दी। अब की बार फौज और सामान को ले जाने के लिये दक्षिण की ओर तेज़ी के साथ रेल भी बनती गई।

पहली बड़ी लड़ाई बर्बर के पास हुई। इसमें सूडानी दरवेश बुरी तरह से हारे। उनके ३००० सिपाही मारे गये। अब ओमदर्मन पर चढ़ाई की गई। इस लड़ाई में

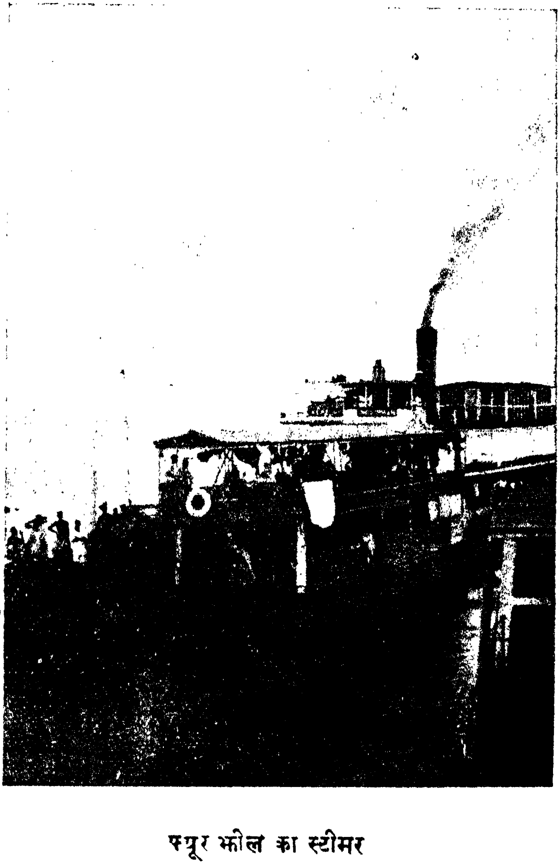
१०,००० दरवेश मारे गये। ५,००० कैद हो गये। इस हार से खलीफा का राज्य नष्ट हो गया। इस बार



लेक के लोग प्रायः नङ्गा रहना पसन्द करते हैं

खलीफा कार्डोफान की ओर भाग गया। विनगेट साहब की अध्यक्षता में सूडानी फौज ने खलीफा की फौज पर

धावा बोल दिया। वहाँ फिर घमासान लड़ाई हुई। खलीफा मारा गया। उसके ३००० दरवेश सिपाही खेत



न्यूर झील का स्टीमर

रहे। उसके बड़े लड़के ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार साढ़े तेईस लाख पौंड के खर्च से तीन वर्ष में

सूडान फिर से जीत लिया गया। इस में १२ लाख रेलवे पर, २१ हजार तार पर, डेढ़ लाख नावों पर और १० लाख पौंड फौज पर खर्च हुए।

खलीफा के समय में मक्का और मदीना का जाना बन्द कर दिया गया था। इसके बदले में देश के लोग महदी के मकबरे की ज़ियारत करने ओमदर्मन आते थे। इससे आगे फिर विद्रोह के उभड़ने का डर था। इसलिये महदी का मकबरा तोड़ डाला गया। कब्र से लाश निकाल कर एक जहाज़ के इंजन में झोंक दी गई। मकबरे की ज़ियारत बन्द कर दी गई। मिस्र और ब्रिटेन की संयुक्त सैनिक और आर्थिक सहायता से सूडान फिर से जीता गया था इस लिये यहाँ दोनों देशों के झंडे फहराने लगे। दोनों का शामिल राज्य रहा। पर वास्तव में यहाँ अंग्रेज़ी राज्य हो गया। जब १९२२ ई० में मिस्र में राजनैतिक गड़बड़ी हुई तब सूडान पर भी इसका असर पड़ा। १९२४ ई० में सूडान में स्थित मिस्री फौज निकाल दी गई। इस समय भी सूडान की अवस्था कुछ कुछ चंचल है।

खर्तूम के महल, घाट, अजायब घर और गार्डन कालेज को देख कर मैं ओमदर्मन गया। श्वेत नील के ऊपर विशाल लोहे का पुल बड़ा मनोहर है। पुल से इस ओर आने पर बाईं ओर बारकें हैं। इसी ओर पहले

किला था। दाहिने हाथ की ओर बढ़ने पर ओमदर्मन शहर पड़ता है। पहले छोटे छोटे और कच्चे मकान मिलते हैं। पेड़ इतने कम हैं कि ट्रेमगाड़ी का रास्ता देखने वालों को धूप में खड़ा होना पड़ता है।

अधिक सुन्दर न होने पर भी ओमदर्मन सूडान का व्यापारी नगर है। इसके बाज़ारों में सूडान की उपज के नमूने देखे जा सकते हैं। पर अधिकतर यहाँ कच्चा माल बिकने आता है। तरह तरह के अनाज, फल, तरकारियाँ बहुत रहती हैं। सड़क के दोनों ओर दुकानें हैं। वे एकदम हिन्दुस्तान के साधारण कस्बों के ढंग पर बनी हैं। इन्हीं गलियों का चक्कर लगाते हुए एक ओर से हिन्दी में बोलने की आवाज सुनाई दी। सूडान के बीच में हिन्दुस्तान से हज़ारों मील की दूरी पर हिन्दी के शब्दों को सुनकर एकदम आनन्द और आश्चर्य से भर गया। आवाज़ आने की दिशा की ओर देखने पर हिन्दुस्तानी चेहरे भी दिखाई दिये। कुछ लोग पाजामा और कुछ लोग धोती पहने हुये थे। अब तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं दुकान के भीतर गया। कुछ ही क्षण में मुझे यहां घर सा मालूम हुआ। पहले एक हिन्दुस्तानी सज्जन ने मोटर मँगा कर मुझे सारे शहर की सैर कराई। फिर मेरे भोजन का प्रबन्ध किया। सैर कराने वाले यहां के एक धनी मुसलमान सज्जन

हैं। भोजन का प्रबन्ध एक कच्छ ब्राह्मण सज्जन के यहाँ था। हिन्दू मुसलमानों की एकता का यहाँ सच्चा नमूना



ओमडर्मन का एक दृश्य

था। मेरा अतिथि सत्कार करने वाले सज्जन के घर पर कई सूडानी नौकर थे। एक बुढ़िया दाई उनके बच्चों को

खिलाती थी। यदि वही बुढ़िया हिन्दुस्तान के किसी घर में आ जावे तब बच्चे उससे डर कर इधर उधर भागने



खर्तूम में गार्डन की शिला-मूर्ति

की कोशिश करें। लेकिन यहाँ के बच्चे उस बुढ़िया की काली डरावनी सूरत को ज़रा भी परवाह नहीं करते थे।

वे उसके दयालु हृदय और सच्ची स्वामिभक्ति से परिचित हो चुके थे। यहाँ के सभी हिन्दुस्तानी अपने देश की चाल से ही रहते हैं। यहाँ कई दिन बड़े आनन्द से बीते। यह बड़े गौरव की बात है कि यहाँ प्रायः सभी हिन्दुस्तानी अच्छी दशा में हैं। इन्हीं के प्रयत्न से सूडान की बहुत कुछ आर्थिक उन्नति हुई है। इनकी कोई संगठित संस्था नहीं है। शायद इसी से शासन-प्रबन्ध में इनकी कुछ नहीं है। सरकारी दरबारों में इनके गोरे नौकर भले ही पहुँचें पर हिन्दुस्तानियों को कोई नहीं बुलाता है। हिन्दुस्तानियों और सूडानियों में पूरा मेल है। पढ़े लिखे सूडानियों में स्वाधीनता की बड़ी लगन है। पर अभी इनकी संख्या बहुत कम है। ओमदर्मन में कोई बड़ी दस्तकारी नहीं है। हाथी दाँत के खिलौने और शुतुर्मुर्ग के परों के पंखे बड़े सुन्दर बनते हैं। यहाँ से विषुवत रेखा की ओर रेल, मोटर और स्टीमर मार्ग है। एक बार अफ्रीका को पार करके दक्षिणी सिरे पर पहुँचने की इच्छा हुई। पर कुछ भारी सामान केरो के होटल में ही छोड़ आया था। उधर योरुप यात्रा भी आवश्यक थी इसलिये ओमदर्मन से सवेरे चलकर खर्तूम आया और फिर यहाँ से केरो के लिये चल दिया।

—:o❀o:—

मिस्री-सूडान

अरबी लोग इस देश को बिलाद अस् सूदान या काले लोगों का देश कहते हैं। पर सूडान बहुत बड़ा प्रदेश है। यह सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में अटलांटिक महासागर से लालसागर तक फैला हुआ है। मिस्री सूडान इसका पूर्वी भाग है। बहुत समय तक यहां मिस्र देश का शासन रहा। इसी से इसे मिस्री सूडान कहते हैं। जब मिस्र देश पर इङ्गलैंड का आधिपत्य हो गया तब से यह एंग्लो मिस्री सूडान कहलाने लगा। उस समय से नाम मात्र के लिये यहाँ मिस्र देश का अधिकार रहा पर वास्तव में यहां इंगलैंड का अधिकार हो गया।

मिस्री सूडान के उत्तर में मिस्र देश है। २२ उत्तरी अक्षांश रेखा दोनों के बीच में कृत्रिम सीमा बनाती है। इसके पूर्व में लालसागर, इरीट्रिया और एबीसीनिया है। इसके दक्षिण में यूगांडा का ब्रिटिश रक्षित देश और बेल्जियम कांगो है। इसके पश्चिम में फ्रांसीसी कांगो है। डार्फूर के उत्तर में लिबिया का रेगिस्तान है। यहीं उत्तरी और पश्चिमी सीमायें एक दूसरे से मिल जाती हैं।

मिस्री सूडान उत्तर से दक्षिण तक १२०० मील तक फैला हुआ है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी चौड़ाई

१००० मील है। इसका क्षेत्र फल ९,५०,००० वर्ग मील है। जो समस्त भारतवर्ष का प्रायः आधा है। पर इसकी जनसंख्या केवल ६०,००,००० है जो संयुक्त प्रान्त की प्रायः $\frac{१}{८}$ है।

प्राकृतिक विभाग—मिस्री सूडान दो प्राकृतिक विभागों में बांटा जा सकता है। १६ उत्तरी अक्षांश के उत्तर में उत्तरी सूडान सहारा रेगिस्तान का अंग है। दक्षिण की ओर अधिक वर्षा और बनस्पति है। अधिक दक्षिण में नील नदी और बहरुल गज़ल नदी के किनारों पर दूर तक दल दल फैले हुये हैं।

नील नदी सूडान को दक्षिण से उत्तर की ओर पार करती हुई बहती है। सूडान के दक्षिणी भाग में नील की तली की उंचाई समुद्र-तल से १६०० फुट है। उत्तरी भाग में यह केवल ६०० फुट रह जाती है। नील नदी की प्रधान सहायक नदियां प्रायः सभी मिस्री सूडान में अपना पूरा मार्ग समाप्त करती हैं अथवा कुछ दूर तक बहती हैं। सूडान का सबसे ऊँचा और पहाड़ी जिला लाल सागर के समानान्तर चला गया है। सूडान में इन पहाड़ी टीलों की उँचाई ४,००० फुट से ७,००० फुट तक है। पूर्व की ओर इनका ढाल अधिक सपाट है। जबील अर्बा चोटी ७४८० फुट ऊँची है। यही सब से ऊँची चोटी है। नील नदी के पश्चिम में सूडान का

विशाल मैदान है। १० और १५ अक्षांशों के बीच में कार्डोफान और दरनूबा प्रान्तों में इस मैदान में कुछ पहाड़ियां फैली हुई हैं। किसी किसी पहाड़ी की ऊँचाई २,००० फुट है। अधिक पश्चिम की ओर दारफूर में भूमि और अधिक ऊँची है। यहां जबील मर्स श्रेणी ५,००० फुट से ६,००० फुट तक ऊँची है। दक्षिण-पश्चिम में बहरुल गज़ल की घाटी के आगे भूमि क्रमशः ऊँची होती गई है। यही ऊँची भूमि कांगो और नील नदियों के बीच में जल विभाजक बनाती है। यह ऊँची भूमि नील की ओर बह कर जाने वाले वर्षा जल को कांगो की ओर पहुँचने वाले पानी से पृथक करती है।

नील और उसकी सहायक नदियों को छोड़ कर सूडान में दो छोटी नदियां और हैं। यह गश और बरका नदियां इरीट्रिया की पूर्वी श्रेणी से निकलती है। इनमें कभी पानी रहता है और कभी वे एक दम सूख जाती हैं।

गश नदी कसाला नगर के पास सूडान में प्रवेश करती है। इसके पश्चिम की ओर मुड़ कर वह अतबारा की ओर बहती है। गश नदी का पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। इससे वह अतबारा तक नहीं पहुँच पाती है। गश नदी बड़े भाग को काफी हरा भरा और उपजाऊ बनाती है। गश के पूर्व में खोर बरका नदी है। खोर

बरका नदी पूर्व की ओर लाल सागर की ओर बहती है। पहले यह ट्रिङ्किलात नगर में पहुँचती है जो सुआकिन बन्दरगाह से ५० मील दक्षिण की ओर है। समुद्र तट से ३० मील भीतर की ओर यह एक बड़ा डेल्टा बनाती है। जब किसी वर्ष प्रबल वर्षा होती है तब इसका जल समुद्र तक पहुंच पाता है। शेष वर्षों में यह नदी समुद्र से ३० मील भीतर की ओर स्थल में डेल्टा बना कर समाप्त हो जाती है। इसका जल समुद्र तक नहीं पहुँचने पाता है।

समुद्र तट—लाल सागर की ओर सूडान का समुद्र-तट लगभग ४०० मील लम्बा है। और १८ उत्तरी अक्षांश से २२ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। पर पोर्ट सूडान और सुआकिन पो बन्दरगाहों को छोड़ कर इस ओर अन्य अच्छे बन्दरगाह नहीं हैं। सुआकिन के दक्षिण में ट्रिङ्किलात की उथली खाड़ी। तट के सामने यहां कई छोटे छोटे द्वीप हैं। तट से भीतर की ओर कटीली झाड़ियों से ढके हुये रेतीले टीले १० मील से २० मील तक चले गये हैं। इस १५ या २० मील चौड़े तङ्ग तटीय मैदान के आगे पश्चिम की ओर पर्वत श्रेणियां हैं। इनका पूर्वी ढाल अधिक सपाट है इसी ओर कुछ वनस्पति है।

रेगिस्तानी पेटी—समुद्र-तट और नील नदी के बीच

में नूबिया का पथरीला विषम रेगिस्तान है। इसे वादियों ने काट दिया है। इन वादियों के मोड़ पर कुछ सूक्ष्म वनस्पति है। केवल नील नदी के दोनों किनारों पर कुछ खेती के योग्य भूमि है। नील नदी के पश्चिम में नूबिया से भी अधिक विकराल रेगिस्तान हैं। इसमें कुछ मरुद्यान (नखलिस्तान) उपजाऊ अवश्य हैं।

मध्यवर्ती पेटी और उपजाऊ जिले नील, अतबारा और नीली नील के मध्यवर्ती द्वाबा बड़े उपजाऊ हैं। श्वेत नील और तूती (नीली नील) के बीच का द्वाबा या जजीरा विशेष रूप से उपजाऊ है। जजीरा के दक्षिण में सेनार है जहां खेती और चरवाही के योग्य ज़मीन है। नील के पश्चिम में कार्डोफान है जो बहरुल गज़ल के सजल मैदान और रेगिस्तान के बीच में स्थित है। यहां कुछ चरागाह हैं कुछ ऊसर भूमि है। १० उत्तरी अक्षांश के दक्षिण में विषुवत रेखा के समीप होने से सब कहीं पानी की अधिकता है। दारफूर स्टेपी प्रदेश की तरह अधिकतर खुला हुआ मैदान है। यहां अधिकतर भाग में खेती हो सकती है। मध्यवर्ती भाग में जबील मरी पहाड़ है।

जलवायु

मिस्री सूडान सब का सब उष्ण कटिबन्ध में स्थित है। इसके अधिकतर भाग पर समुद्र का असर नहीं पड़ता है। उँचाई भी १,००० फुट से कम है अतः यहां विकराल गरमी पड़ती है। मध्यवर्ती भाग में सब से अधिक गरमी पड़ती है। रेगिस्तानी भाग में गरमी कम पड़ती है। लेकिन ग्रीष्म और शीतकाल के तापक्रम में अधिक अन्तर रहता है। पर हवा में खुश्की रहने से यहां की जलवायु स्वास्थ्यकर रही है। कार्डोफान और दारफूर के स्टेपी प्रान्त भी स्वास्थ्यकर रहते हैं। केवल वर्षा ऋतु में कुछ मलेरिया फैल जाता है। खर्तूम की स्थिति मध्यवर्ती है। यहां अल्प तापक्रम ४० अंश और परम-तापक्रम ११३ अंश फारेन हाइट देखा गया है। यहां जनवरी सबसे ठंडा और जून सबसे गरम महीना होता है। औसत तापक्रम ८० अंश फारेन हाइट होता है। जून से अगस्त तक भीषण धूल भरी आंधियां चला करती हैं। वर्षा के अनुसार मिस्री सूडान चार भागों में बांटा जा सकता है। उत्तरी भाग में वर्षा का प्रायः अभाव रहता है। यहाँ शीत काल में कभी-कभी कुछ वर्षा हो जाती है। ग्रीष्म काल में भी एक दो बार

तूफान आने पर वर्षा हो जाती है। मध्य भाग अपने जैपुर के समान है। यहां आधे जून से सितम्बर तक वर्षा होती है। वर्ष भर में १० इंच वर्षा होती है। जितने दिन वर्ष भर में वर्षा होती है उनकी संख्या १३ इंचसे अधिक नहीं होती है। पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी भाग में २० इंच तक वर्षा हो जाती है। दलदली जिलों और बहरुलगज़ल के प्रदेश में प्रबल (वर्ष भर में ४० इंच से ऊपर) वर्षा होती है। अप्रैल से सितम्बर तक वर्षा होती है। हवा में बड़ी नमी रहती है। यहां मलेरिया ज्वर बहुत फैलता है। यहां औसत तापक्रम ८३ अंश फारेन हाइट रहता है।

वनस्पति

उत्तर की ओर रेगिस्तानी भाग में केवल कहीं-कहीं एक आध सूखी झाड़ी नागफनी मिलती है। रेगिस्तान और नील नदी के किनारे वाले खेतों के बीच में राम बांस या इसी जाति की कटीली झाड़ियां हैं। खर्तूम और १२ उत्तरी अक्षांश के बीच में अरबी जाति की नागफनी है। कार्डोफान के बहुत बड़े भाग में कटीली झाड़ियों का जङ्गल है। कुछ झाड़ियों से गोंद मिलता है। सूडान के कई भागों में विशाल तबेल्दी या बाओ-

बैब वृक्ष पाया जाता है। दक्षिणी कार्डोफान और बहरुलगज़ल के ऊँचे भागों में आबनूस का पेड़ पाया जाता है। विषुवत रेखा के समीप रबर के पेड़ पाये जाते हैं। बहरुल जबील के पूर्व और बहरुलगज़ल के उत्तर में बहुत बड़े प्रदेश ऊँची मोटी घास से ढके हैं। तूती (नीली नील) की घाटी में कपास स्वयं उगती है। रेंड़ भी कई स्थानों में उगता है।

पशु

मिस्री सूडान में असंख्य पशु पाये जाते हैं। बहरुल गज़ल और बहरुल जबील के जङ्गलों में हाथी बहुत हैं। ऊपरी तूती घाटी में भी हाथी पाये जाते हैं। नदियों के दलदल भरे मार्ग में दरियाई घोड़ा (हिपो) और घड़ियाल बहुत हैं। यहां मछली खाने वाली कई जाति की चिड़ियां भी बहुत हैं। खुले वनों और घास वाले प्रदेश में शेर, तेंदुआ, जीराफ और कई प्रकार के हिरणों की भरमार है। घने जङ्गलों में सुन्दर पक्षी और बन्दर रहते हैं। बन्दर प्रायः भूमि पर रहते हैं। पेड़ों की डालियों में प्रायः इतने कांटे रहते हैं कि वे इन पर छलांगना पसन्द नहीं करते हैं। विषैले और दूसरी जाति के सांप यहां बहुत हैं कार्डोफान दारफूर आदि स्टेप प्रदेश और

नूबिया के रेगिस्तान में शुतुर्मुर्ग बहुत हैं। मच्छड़, बर्र, कीड़े मकोड़े सब कहीं हैं।

खनिज

प्राचीन समय में नील और लाल सागर के बीच में नूबिया रेगिस्तान में (मुआकिन-बर्बर लाइन के उत्तर और मिस्र देश के दक्षिण में) सोना निकाला जाता था। इस समय कुछ सोना उमनबर्दी (वादी हल्फा और अबू हमीद के बीच में निकाला जाता है। कुछ सोने के कण कार्डोफान प्रान्त में निकाले जाते हैं। सेनार के दक्षिण-पश्चिम बनी शंगुल में भी सोना पाया जाता है। डोंगोल मुदीरिया में कोयला और दार्फूर, दक्षिणी कार्डोफान और बहरुलगज़ल में कच्चा लोहा पाया जाता है। होफरतुल नहस जिले में तांबा निकाला जाता है।

कृषि

खर्तूम के उत्तर में खेती केवल नील नदी के दोनों किनारों की तंग पेटी और लिबिया के कुछ मरूद्यानों में होती है। इस ओर शेष भाग इतने खुश्क हैं कि उनमें खेती नहीं हो सकती। जजीरा, और जदराफ के

मैदानों में जो तूती (नीली नील) और अतबारा के बीच में स्थित हैं, विशाल खेती के योग्य प्रदेश हैं। कसाला और गश नदी के समीप भी उपजाऊ भूमि है। यहां सिंचाई का प्रबन्ध हो जाने से कपास और दूसरी फसलें उगने लगी हैं। कार्डोफान और दारफूर में खोर या घाटियों में खेती होती है। दुर्रा (एक प्रकार की ज्वार) यहां की प्रधान फसल है। यही सूडानी लोगों का प्रधान भोजन है। कुछ गेहूँ, जौ और चना भी उगाया जाता है। तरह तरह की दालें, तरबूज, खरबूजा प्याज़ और तरकारियां भी उगाई जाती हैं। नील नदी के पश्चिमी किनारे और नखलिस्तानों में छुहारे उगाये जाते हैं। दारफूर और कार्डोफान में नारियल भी होता है। कई जिलों में तिल होता है। सेनार के पास तूती (नीली नील) में १९२५ ई० में माक्वार बांध के बन जाने से यहां ३ लाख एकड़ से ऊपर भूमि सींची जाने लगी। कसाला में गश नदी से सिंचाई होती है। साधारणतया यहां रहट से खेत सींचे जाते हैं। गोंद और रबर सूडान के जंगलों की प्रधान उपज हैं। गोंद खुश्क भागों में और रबर विषुवत रेखा के उष्णार्द्र वन में होती है। बनों में हाथी दांत के लिये हाथियों का शिकार होता है। डंगोला में अच्छे घोड़े और बर्बर के उत्तर रेगिस्तानी प्रदेशों में ऊँट

पाले जाते हैं। कार्डोफान और सेनार के दक्षिण में बहुत कम शुतुर्मुर्ग और ऊंट मिलते हैं। गधे प्रायः सब कहीं मिलते हैं। यह चढ़ने और बोझा ढोने के काम आते हैं।

जनसंख्या, नगर और मार्ग

मिस्री सूडान की जन-संख्या लगभग ६० लाख है। लेकिन सब भागों में जनसंख्या की सघनता समान नहीं है। रेगिस्तान और स्टेपी प्रदेश में तो जनसंख्या कम है। उपजाऊ भाग भी घने बसे हुये नहीं हैं। उत्तरी रेगिस्तानी भाग में प्रायः घुमक्कड़ लोग रहते हैं। यह हब्शी और अरबी लोगों के मिश्रण हैं। नील की घाटी और उत्तरी भाग के नूबियाई लोग सब से अधिक वर्णसंकर हैं। अबाब्दा और बिशारिन इधर दो बड़े फिरके हैं। बर्बर और सुआकिन के दक्षिण में हादेन्दोआ लोग रहते हैं। अतबारा और तूती (नीली नील) के मध्यवर्ती भाग में जालिन हस्सानिया और शुक्रिन लोग रहते हैं। हस्सानिया और हसनत लोग जज़ीरा में रहते हैं। कार्डोफान के उत्तर मरु प्रदेश में कबाबिश और बग्गार लोग रहते हैं। हब्शियों की कई जातियाँ हैं। शिल्का लोग नील नदी के पश्चिम में रहते हैं।

बहरुल गज़ल प्रान्त में दिन्का लोग फैले हुये हैं। कार्डोफान के दक्षिण में शिलूक लोग बसते है। शिलूक प्रदेश के पश्चिम में नूबा लोग रहते हैं। बहरूल गज़ल के दक्षिण-पश्चिम में बोंगो लोग रहते हैं। नील और कांगो के जल विभाजक में अज्ज़न्दी या न्याम न्याम लोग रहते हैं। इनका रंग कम काला (कुछ खुलता हुआ) है।

सूडानी लोगों के देश में इतना कम जाड़ा पड़ता है कि प्रकृति इन्हें कपड़ा बनाने या पहनने के लिये बाध्य नहीं करती है। न उन्हें घर बनाने की विशेष आवश्यकता होती है। अतः यह लोग मिस्री लोगों की अपेक्षा सभ्यता में बहुत पिछड़े हुये हैं। बहुत से अरबी भी यहां कुछ लत्तों से शरीर ढकते हैं और चटाई पर सोते हैं। अरबी लोग इस्लाम धर्म को मानते हैं। हब्शी लोग प्रकृति के उपासक हैं।

खर्तूम इस देश की राजधानी है। यह श्वेत नील और तूती के संगम पर बसा हुआ है। इसके सामने श्वेत नील के पश्चिमी किनारे पर पुराना नगर ओमदर्मन बसा हुआ है। नदी के ऊपर पुल बना है। खर्तूम जल और रेल मार्गों का जंकशन होने से व्यापार का केन्द्र है। यह शिक्षा का भी केन्द्र है। कारीगरी में पिछड़ा हुआ है। कुछ स्थानीय कारीगर यात्रियों के लिये हाथी दाँत के खिलौने और शुतुर्मुर्ग के परों के

पंखे बनाते हैं। नील नदी के किनारे बसे हुये और खर्तूम के उत्तर में बर्बर, अबू हमीद और मेरावा नगर हैं। अधिक आगे डोंगोला और वादी हल्फा है। वादी हल्फा मिस्र और सूडान की सीमा के पास स्थित है। यहीं नील की स्टीमर यात्रा समाप्त होती है। और सूडानी रेल खर्तूम के लिये आरम्भ होती है। लाल-सागर के किनारे पर पोर्ट सूडान और पोर्ट सूआकिन दो बन्दरगाह हैं। पोर्ट सूडान में अधिक व्यापार होता है। पोर्ट सुआकिन में दीनदार मुसलमान हज करने के लिये मक्का और मदीना को जाते हैं। दोनों ही बन्दर-गाह रेलद्वारा भीतरी प्रधान रेलवे लाइन से जुड़े हुये हैं। अतबारा के पूर्व में इरीट्रिया की सीमा के पास गश (छोटी नदी) के किनारे कसाला नगर स्थित है। तूती या नीली नील के किनारे कमलिन, सेनार और वाद मदनी नगर स्थित हैं। वाद मदनी एक व्यापारिक केन्द्र और तूती प्रान्त की राजधानी है। रोस रीस उस स्थान पर स्थित है जहां तक तूती में स्टीमर चल सकते हैं। गालाबात कसाला प्रान्त का प्रधान नगर है जो एबीसीनिया की सीमा के पास स्थित है। जद्-रीफ़ नगर तूती और अतबारा नदियों के बीच में स्थित है। अल ओबैद नगर खर्तूम से २३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कार्डोफान का प्रधान नगर है। दुईम

श्वेत नील, प्रान्त का प्रधान नगर है। यह कार्डोफाम का नदी तट का बन्दरगाह है। अलफशीर नगर दारफूर प्रान्त की राजधानी है। यह खर्तूम से ५०० मील पश्चिम दक्षिण की ओर है। फशोदा को कोदोक भी कहते हैं। यह ऊपरी नील के प्रान्त की यह राजधानी है। मिस्री सूडान की स्थिति में विशेषता यह है कि एक (रोसरीस) नगर को छोड़कर शेष सभी नगर १३ उत्तरी अन्तांश के उत्तर में स्थित हैं।

खर्तूम के उत्तर में मिस्री सूडान में आना जाना प्रधानतया रेल द्वारा होता है। खर्तूम के दक्षिण में यात्रा प्रायः स्टीमर द्वारा होती है। सूडान की रेलवे लाइनें उत्तर में मिस्र और पूर्व की ओर लाल सागर के तट को मिलाती हैं। मिस्री सूडानी रेलवे लाइन वादी हल्फा से पहले सीधी रेखा में रेगिस्तान को पार करती हुई अबू हमीद तक आती है। अबू हमीद के आगे रेलवे लाइन नील नदी के दाहिने किनारे के समानान्तर चलती है। खर्तूम के पास तूती नदी को पुल द्वारा पार करके रेलवे लाइन दक्षिण की ओर जज़ीरा में सेनार तक चली गई। यहां से एक शाखा पश्चिम की ओर अल ओबैद को जाती है। यह शाखा कोस्ती के पास श्वेत नील को पार करती है। रेलद्वारा अल ओबैद खर्तूम से ३५० मील दूर है। वादी हल्फा से

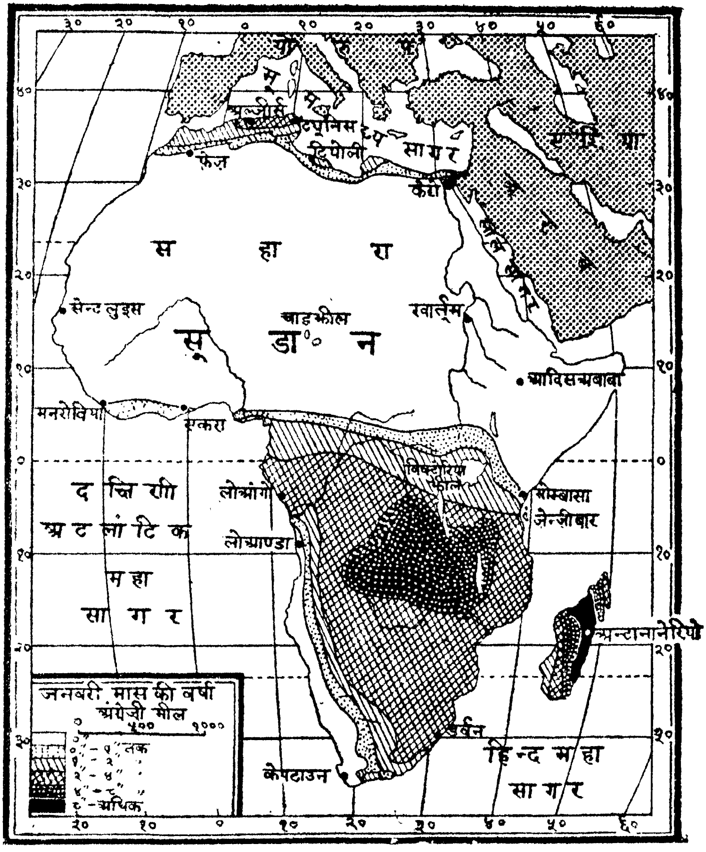
खर्तूम ५७५ मील दूर है। खर्तूम से सूडान ४६३ मील दूर है। अतबारा जंक्शन से रेलवे लाइन लाल सागर के किनारे को जाती है। हल्फा से शल्लाल तक भी स्टीमर चलते हैं। इसके आगे सिकन्दरिया को रेल मार्ग गया है। खर्तूम से सिकन्दरिया १४६० मील दूर है। नील नदी में दक्षिण की सरकारी स्टीमर खर्तूम से गोंडो कोरो और रजफ तक जाते हैं। गोंडो कोरो यूगांडा में और रजफ बेल्जियन कांगो में स्थित है। बाढ़ के दिनों में स्टीमर तूती नदी में रोसरीस तक चला करते हैं। ऊपरी नील और बहरूल गज़ल में कीचड़ और सरकंडो की रुकावट पड़ती है। इसे दूर करने के लिये प्रबल स्टीमर सरकंडा काटने से लगे रहते हैं। काफिलों के पुराने मार्ग में स्थान स्थान पर कुयें और सराये हैं। कुछ भागों में मोटर चलने लगे हैं। प्रधान नगरों में टेलीग्राफ हैं।



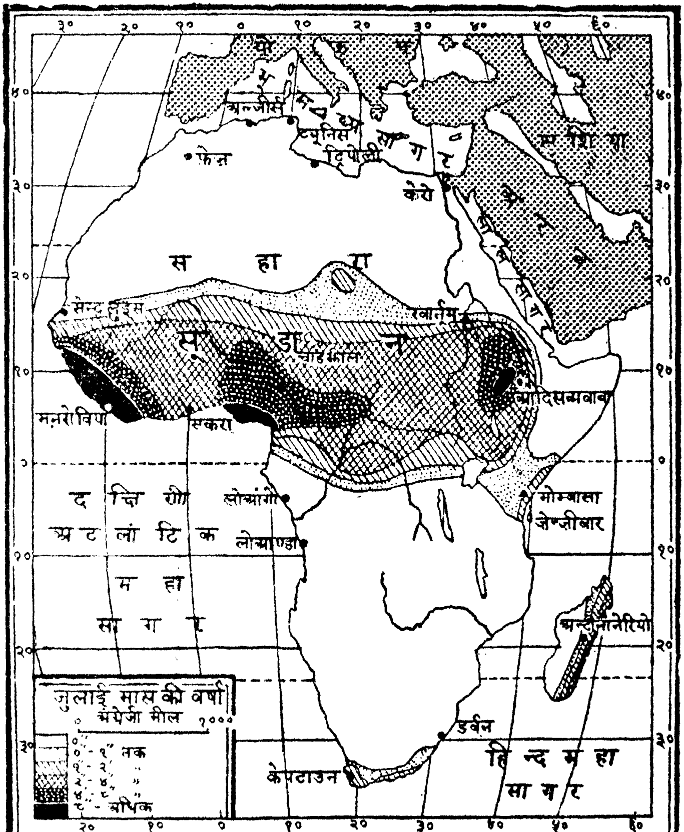
एक सूडानी स्त्री और उसका बच्चा।



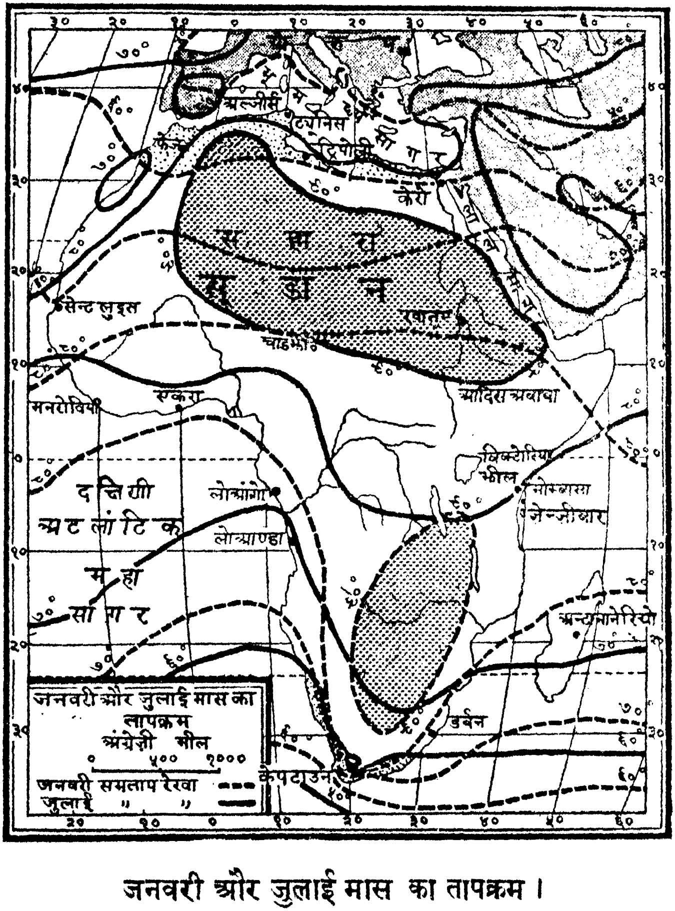
माक्वार का सेनारडैम (बांध) कई लाख एकड़ ज़मीन सींचता है।


सहारा
सूडान
दक्षिणी अटलांटिक महासागर
हिन्द महासागर
फेज़
त्रिपोली
ट्यूनिस
काहिरा
सेन्ट लुइस
चाड झील
खार्तूम
आदिस अबाबा
मनरोविया
एकरा
लोआंगो
लोआण्डा
मोम्बासा
ज़ंजीबार
डर्बन
केपटाउन
जनवरी मास की वर्षा
अंग्रेजी मील

जनवरी मास की वर्षा।


अल्जीयर्स
ट्यूनिस
ट्रिपोली
फेज
केरो
स हा रा
सेन्ट लुईस
खार्तूम
सू डा न
चाडझील
अदिसअबाबा
मनरोविया
अकरा
द क्षि णी
अ ट लां टि क
म हा
सा ग र
लोआंगो
लोआण्डा
मोम्बासा
जेन्जीबार
अन्टानानेरियो
डर्बन
केपटाउन
हि न्द म हा
सा ग र
जुलाई मास की वर्षा
अंग्रेजी मील

जुलाई मास की वर्षा।



जनवरी और जुलाई मास का तापक्रम।